PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 7, ISSUE 2

बहुमुखी प्रतिभा के धनी मुन्शी प्रेमचंद

मोहमद अझहरोद्दीन म. जब्बारोद्दीन
मुख्याध्यापक
उर्दू हायस्कूल तथा डॉ. अल्लमा एकबाल उच्च
माध्यमिक विद्यालय, धर्माबाद,
ता. धर्माबाद, जि.नांदेड. **(महाराष्ट्र) भारत**

प्रेमचंद हिंदी साहित्य में ऐसा नाम है, जिसे शायद ही कोई ऐसा व्यक्ती होगा जो उनसे परिचित न हो| प्रेमचंद के बिन शायद ही हिंदी साहित्य पुरा हो सकता है| प्रेमचंदजीने हिंदी कथा साहित्य को संजीवनी देने का कार्य किया है, इसलिए 1880 से 1936 तक के हिंदी साहित्य का काल प्रेमचंद युग नाम से पहचाना जाता है|

प्रेमचंद अपने उपन्यास, कहानियों के कारण नही बल्की उसके प्राकृत बोलचाल की भाषा के कारण भी जन-जन के प्रिय कथाकार बने| प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 इ. को बनारस से पाँच मील दूर लम्ही के पूश्तेनी मकान में हुआ| ये एक साधारण परिवार में रहते थे| इनके चाचा इन्हे 'नवाबराय' कहते थे| इनके मित्र इन्हे 'बम्बुक' नाम से बुलाते थे| ये अपने आपको प्रेमचंद कहते थे| प्रेमचंद का जीवन अत्यंत स्नेहशील एवम् सेवामय था| प्रेमचंद अपने जीवन के विषय में कहते है, मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है जिसमे गड्डे तो कही कही पर है परंतु टिलों, पर्वतों घने जंगलों, गहरी घाटियो और खंण्डरो का स्थान नही है|

हिंदी उपन्यास ऐयारी और तिलस्मी किस्से से निकालकर समाज का यर्थाथवादी दर्शन प्रेमचंदजीने अपने साहित्य से कराया है| प्रेमचंद के कथा साहित्य का केंद्र बिंदु हमेशा मध्यमवर्गीय ही रहे है| हिंदी उपन्यासों मे पहले नायक-नायिका, राजा-राणी हुआ करते थे| फिर उनका स्थान जमिनदारों ने ले लिया| यह स्थिती प्रेमचंद पूर्व की थी लेकीन प्रेमचंद ने मध्यमवर्गीय तथा निम्नमध्यमवर्गीय से नायक-नायिका का चयन किया| प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों की प्रभाव क्षमता बढाने के लिए घटनाओं के संयोग पात्रों के संवाद उनके चरित्रांकन को यथार्थता के निकट रखा| इन्हे साहित्य का युगप्रवर्तक भी कहा जाता है| इन्होंने उर्दु और हिंदी में पुरे अधिकार से लिखो उनकी

अधिकांक्ष रचनाएँ मुलरुप से उर्दु में लिखी गई लेकिन उनका प्रकाश हिंदी मे पहले हुआ| 33 वर्ष के रचनात्मक जीवन मे वे साहित्य की ऐसा विरासत सौपे गए, जो गुणों की दृष्टी से अमुल्य है और आकार की दृष्टी में असिमीत है| उनकी साधारण मुहावरेदार भाषा आसानी से समझ मे आती है और गहराई से दिल मे उतर जाती है|

हिंदी उपन्यास की महत्वपुर्ण घटना प्रेमचंद का उपन्यास 'सेवासदन' का प्रकाशन था, वैसे 'सेवासदन' के पुर्व प्रेमचंदने कई उपन्यासों की रचना उर्दु भाषा में कि थी| जिसमें 'हसखुर्मा व हसबाब' 1907 हिंदी में 'प्रेमा' नाम से प्रकाशित हुआ| इनका अन्यत्र आरंभिक उपन्यास 'असरारे मआबिद' उर्फ देवस्थान रहस्य, 'रुठी रानी', 'जलवाई इसार' आदि थे| आजादी पुर्व किसानों की हालत के बारे में इतिहास लिखा जाए तो इतिहासकारो का प्रथम स्त्रोत होगा, प्रेमचंद्र का गोदान क्यों की इतिहास कभी भी अपने समय के साहित्य को ओझल नही करता| 'गोदान' मात्र किसान कि संघर्ष गाथा नही वरन इसमें स्त्री की बहुरुपात्मक स्थिती को दर्शाते हुए उनकी संघर्ष गाथा का चित्रण किया गया है| 'गोदान' में अभिव्यक्त गोबर और झुनिया के बिच अवैध प्रेम और विवाह, सिलिया चमाइन और मातादीन का प्रेम, मेहता और मालती का प्रेम एक प्रकार 'लिव इन रिलेशनशिप' का उदाहरण है| 'सेवासदन' मे एक वैश्या के बहाने प्रेमचंद ने धर्म के नाम पर चलनेवाले आनाथालयों एवं पाखंण्डो का भांडाफोड किया है| 'कर्म भुमी' मे मुन्नी द्वारा बलात्कारी सिपाही की हत्या स्त्री मुक्ती के संघर्ष का अनुठा साहस है| गबन मे जालपा का आभुषणो के प्रति लगाव स्त्री की इच्छाओं की सिमाओ को दर्शाया है|

प्रेमचंद ने 19 वी सदी अंतिम दशक से 20 वी सदी के लगभग तीसरे दशक तक भारत में फैली तमाम सामाजिक समस्याओं पर लेखनी चलायी है| कहानी के क्षेत्र मे प्रेमचंद का नाम अद्वितीय रहा है| इस अवधि में उन्होंने लगभग दो सौ कहानियाँ लिखी प्रेमचंद की कहानियाँ अपने आसपास की जिंदगी से जुडी हुई थी| इनकी रचनाओं मे तत्कालीन इतिहास बोलता है| ग्रामीण जीवन से उनका निकट का संबंध रहा था| अपनी रचनाओं में जनसाधारण की भावनाओं परिस्थितीयों और उनकी समस्या का मार्मिक चित्रण उन्होंने किया| उनकी कृतियाँ भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत्व की आधारभूत रहस्यात्मकता पर बल देती है| 'बडे घर के बेटी' आनंदी अपने देवर से अप्रसन्न हुई, क्योंकी वह गवार उसको कर्कशता से बोलता है और उस पर खींचकर उखाड फेकता है| जब उसे अनुभव होता है की उनका परिवार टुट रहा है और उसका देवर पश्चाताप से भरा हुआ है, तब वह उसे क्षमा कर देती है और अपने पती को शांत करती है| नमक का दोरोगा के माध्यम से समाज में फैजी इस्पेक्टर राज का जिक्र है| कोई भी अध्ययन उनकी निगाहो से बच नही सका|

प्रेमचंद की 1930 के बाद की कहानियाँ उनकी पुर्ववर्ती कहानियों से नितांत भिन्न है| यद्यपि इनके कुछ निहायत कमजोर कहानियाँ मिल जाती है| पर इस काल की अधिकतर कहानियों का स्वर और तेवर पहले से बदला हुआ प्रतीत होता है| उदाहरण के तौर पर 'पूस की रात', 'ईदगाह', 'बडे भाई सहाब', 'ठाकुर का कुआ', 'तावान', 'ज्योति', 'कायर', 'होली का उपहार' और 'कफन' का उल्लेख किया जा सकता है|

प्रेमचंद की इस काल की कहानियों में सचाई को उनके नग्नतम रुप मे ही देखने का प्रयास नही, उसके उस पहलु को भी पकडने की चेष्टा है, जिसकी ओर साधारण: दृष्टी नही जाती 'पूस की रात', 'तावान' और 'कफन' तो प्रेमचंद की ही नही हिंदी की बेजोड कहानियाँ है|

प्रेमचंद के साहित्य व भाषा संबंधित निबंध व भाष कुछ विचार नामक संग्रह में संकलित है| इसके अतिरिक्त साहित्य का उद्देश मे प्रेमचंद की अधिकांश संपादकीय टिप्पणियाँ संकलित है|

प्रेमचंदजी की उत्कृष्ठ बहुमुखी रचनाओं के लिए यही उन्हे कथासम्राट के स्थान पर साहित्य सम्राट की उपाधि दी जाए तो अतिशयोक्ती नही होगी| ऐसे महान उपन्यासकार नाटककार, साहित्यकार के लिए इससे बढकर श्रध्दांजली का होगी| उनकी मृत्यु के आठ दशको बाद भी उनकी रचनाओं की प्रासंगिकता पुर्ववत् बनी हुई है| युवा पीढी भी आज प्रेमचंद की रचनाओ को अध्ययन कर रही है| हजारो की संख्या में लोग उनकी रचनाओं व शैली पर शोध कर रहे है| वह निसंदेह हमारे हिंदी साहित्य का गौरव थे, है और सदैव रहेगी| ऐसी महान बहुमुखी विभुती की जीतना सराहना/प्रशंसा की जाए उतनी कम है|

संदर्भग्रंथ सुची:

1) प्रेमचंद घर में - शिवरानी देवी
2) हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ.नगेंद्र, डॉ.हरदयाल
3) प्रेमचंद और उनका युग - रामव विलास शर्मा
4) गोदान - प्रेमचंद
5) प्रेमचंद के नारी पात्र - ओमप्रकाश अवस्थि
6) गबन - प्रेमचंद
7) बडे घर की बेटी - प्रेमचंद
8) कर्मभूमी - प्रेमचंद